विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत   दिनांक 10-04-2021

वर्ग सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

व्याकरण वह शास्त्र (वाङ्मय) है, जिससे हम भाषा के नियमों और प्रणाली का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

वि + आ + कृ के योग से व्याकरण की संरचना है। व्युत्पत्ति (टुकड़े) विश्लेषण करना व्याकरण भाषा का विश्लेषण कर उसके स्वरूप को स्पष्ट करती है। अन्य शब्दों में व्याकरण वह शास्त्र है, जिससे हमें भाषा के शद्ध बोलने और लिखने की विधि (प्रणाली) का ज्ञान होता है।

वर्ण -

ध्वनि की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं, अर्थात् वर्ण का सूक्ष्म रूप ध्वनि है।

वर्ण के भेद - वर्ण के दो भेद होते हैं

स्वर

व्यंजन

स्वरा :- येषां वर्णानाम् उच्चारणं स्वतन्त्रतया भवति थे स्वरा: कथ्यते।

स्वर की परिभाषा - जो स्वयं अपनी सामर्थ्य से स्वयं बोले जाने वाले को स्वर कहते हैं।

स्वर के तीन भेद होते हैं

ह्रस्व स्वर (हस्व स्वरा☺

दीर्घ स्वर (दीर्घ स्वरा☺

मिश्रित स्वर

हस्व - (एते एकमात्राकालेन उच्चार्यामाणा) हस्व स्वर वह है जो कम समय में तथा ऊँचे स्वर में बोला जाता है। ये पाँच होते हैं।

जैसे-अ, इ, उ, ऋ, लृ

क् + अ = क

क् + आ = का

क् + इ = कि

क् + उ = कु

क् + ऋ = कृ

ल् + ऋ = लृ